पाठ 4

मौसी

– श्री भीष्म साहनी

प्रस्तुत कहानी एक स्त्री के मानवीय लगाव और स्वभाव के उदात्त स्वरूप का वर्णन है, जो सबके सुख–दुःख में अपनी पहल और प्रतिबद्धता के साथ शामिल होती है। वह बड़ों के लिए ही नहीं बच्चों के साथ भी उनके खेल, खिलौने और कथा संसार के आनंदमयी दुनिया में शामिल रहती है। लेकिन सबके काम आनेवाली 'मौसी' जब बीमार पड़ती है तो उसके साथ उपेक्षा का व्यवहार होता है। उसके प्रति यह व्यवहार बहुत ही कारुणिक है। बच्चों की आत्मीयता और रागात्मक भाव मौसी के इस एहसास को जागृत कर देते हैं जिसमें मौसी बेहद विश्वास के साथ कहती है कि 'अब मैं मर भी जाऊं तो तुम लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी'।

उसे सब मौसी कहकर पुकारते थे; बच्चे भी और बड़ी उम्र के लोग भी। किसी के घर बच्चा बीमार होता, तो सबसे पहले मौसी को ही बुलाया जाता। किसी के घर शादी होती, तो वहाँ भी सबसे पहले मौसी ही पहुँचती। दिनभर मुहल्ले में कभी एक के घर, तो कभी दूसरे के घर मौसी बैठी नजर आती।

कभी किसी घर के आँगन में बैठी लड़की के बाल काढ़ रही होती; कभी किसी के घर की छत पर शलजम की कतलियाँ सूखने के लिए डाल रही होती।

जब चंदू की बहिन की शादी हुई, तो मौसी दिनभर दुल्हन की हथेलियों पर मेंहदी के बेल–बूटे बनाती रही।

एक दिन आँगन में बैठी मौसी, नीले रंग के पल्ले पर झिलमिलाते सितारे टाँक रही थी। हम बच्चों से बोली– "आओ, तुम्हें सितारों जड़ा आसमान दिखाऊँ।" कहकर उसने हमारे सामने पल्ला बिछा दिया। सचमुच हमें लगा जैसे तारों से झिलमिलाता आकाश हमारे सामने फैल गया हो।

बड़ी बहिन सुनाती थी कि पहले मौसी तीज–त्योहार के मौके पर नाचा भी करती थी; तरह–तरह के स्वाँग भरती। पर अब वह कुछ–कुछ बुढ़ा गई थी।

मौसी कौन थी, कहाँ से आई थी, कोई नहीं जानता था। किसी को यह भी मालूम नहीं था कि वह रहती कहाँ है। एक बार माँ ने मुझसे कहा– "जा, मौसी को बुला ला।" मैंने पूछा– "कहाँ मिलेगी?" माँ बोली– "मुहल्ले में ही कहीं मिलेगी।" यह भी कोई नहीं जानता था कि मौसी कब उस मुहल्ले में आई थी। बच्चे जब बड़े हो जाते, छोटे स्कूल को छोड़कर मिडिल स्कूल में जाने लगते तो मौसी का दामन छोड़ देते। तब मुहल्ले के दूसरे नन्हे बच्चे उसका साथ पकड़ लेते थे।

रोज दोपहर ढलने पर मौसी नीम के पेड़ तले पहुँच जाती थी। वहाँ सभी बच्चे खेला करते थे। मौसी को बच्चों के साथ खेलना, उन्हें कहानियाँ, चुटकुले सुनाना बहुत पसंद था। जब शाम

हो जाती और बच्चे खेलकर थक जाते, तो मौसी को घेरकर बैठ जाते; उससे कहानियाँ सुनते। आज मुझे जितनी कहानियाँ याद हैं–तोता–तोती की कहानी, काठ के घोड़े की कहानी, सुन्दरबाई की कहानी– वे मैंने मौसी के मुँह से ही सुनी थीं।

मौसी मैला–सा दुपट्टा ओढ़े रहती थी। उसके हर कोने में कुछ–न–कुछ बँधा रहता था– किसी कोने में थोड़े–से चने, किसी में टिकिया, किसी में दाल–फुलियाँ। मौसी दुपट्टे के छोरों को खोलकर, हम सबकी हथेली पर थोड़ा–थोड़ा चना–चबेना रख देती। एक बार मैंने माँ को बताया तो माँ ने मना कर दिया, "उस गरीबिनी से लेकर क्यों खाते हो? वह थोड़ा–सा चना–चबेना अपने लिए रखती होगी।"

मौसी के साथ दिन–रात रहते हुए भी कोई नहीं जानता था मौसी कौन है ? उसका कोई सगा संबंधी है भी या नहीं? कोई बच्चा उससे पूछता– "मौसी, तुम कहाँ की रहनेवाली हो," तो कहती– "तुम्हारे मुहल्ले की।" "तुम कौन हो ?" तो कहती– "तुम्हारी मौसी।'' "तुम्हारे बेटे–बेटियाँ कहाँ हैं ?" तो अपनी उँगली से एक–एक बच्चे को छूकर कहती– "यह मेरा बेटा, यह मेरी बेटी।" नाम पूछो तो कहती– "मैं मौसी हूँ। यही मेरा नाम है।"

एक दिन जब स्कूल की छुट्टी हुई, हम लोग बस्ते उठाकर बाहर निकले तो मौसी फाटक पर नहीं मिली। उस दिन बच्चों को कोई लेने नहीं गया। दोपहर को बच्चे खेलने के लिए निकले तो मौसी पेड़ के नीचे भी नहीं थी। सभी ने एक–दूसरे से पूछा पर किसी को मालूम नहीं था कि मौसी कहाँ गई है।

कई दिन बीत गए पर मौसी का कुछ पता न चला। कोई कहता, मौसी बीमार है। कोई कहता, वह अपने गाँव चली गई है। मौसी के न रहने से मुहल्ला बड़ा खाली–खाली लगता था। पेड़ के नीचे भी सूना–सूना रहता था। कुछ दिन बाद एक मोची पेड़ के नीचे आकर बैठने लगा। पर बच्चों ने उसे खदेड़कर भगा दिया– "यह मौसी की जगह है। यहाँ कोई नहीं बैठ सकता।" मौसी पेड़ के नीचे बैठती थी, तो घरवालों को भी बच्चों की चिंता नहीं थी। अब वे बच्चों को बाहर नहीं खेलने देते थे।

एक दिन हम मौसी की खोज में घूम रहे थे, तभी हमें एक मकान के अंदर से ऊँची–ऊँची बोलने की आवाज सुनाई दी– "हमने ठेका तो नहीं ले रखा है मौसी; बीस दिन से तुम यहाँ पड़ी हो। अब तुम किसी दूसरे के घर चली जाओ।"

मौसी का नाम सुनकर हम सब ठिठककर खड़े हो गए। बंद दरवाजे की दरार में से अन्दर झाँककर देखा। आँगन में मौसी एक खाट पर लेटी थी। बाल उलझे हुए और चेहरा पीला व सूखा हुआ था। उसके पास ही खड़ी एक औरत उसे डाँटे जा रही थी।

"मैं चली जाऊँगी, जरा शरीर सँभल जाए।"

"तू अपने गाँव चली जा।"

"गाँव में मेरा कौन बैठा है ?" कहती–कहती मौसी रुँआसी हो गई।

हमें बहुत गुस्सा आया। मैंने घर लौटकर माँ से कहा तो वह बोली–"बिज्जू की माँ कहाँ तक उसे अपने पास रख सकती है ? मौसी उनके घर में काम तो करती नहीं।"

"मगर माँ, वह तो सबका काम करती है।"

"हाँ बेटा, मगर वह किसी के घर नौकरी तो नहीं करती।" बात मेरी समझ में नहीं आई। पर मैं चुप हो गया।

दूसरे दिन हमारा हॉकी मैच था। हम खेलकर लौट रहे थे। रास्ते में पुल पड़ता था।

हम बातें करते आ रहे थे। एकाएक हमने मौसी को पुल पर बैठे देखा। पास में एक छोटी–सी गठरी और लाठी रखी थी। मौसी को देखते ही हम सब उसे घेरकर खड़े हो गए।

"तू इतने दिन तक कहाँ थी, मौसी ?" एक ने पूछा।

"यहाँ क्या कर रही है, मौसी ?" दूसरे ने कहा।

"यहाँ क्यों बैठी है, मौसी ?"

"मैं यहाँ से जा रही हूँ बेटा," कहते हुए मौसी की आँखें भर आईं।

"तू तो बीमार थी, मौसी। तबीयत कैसी है ?" बलदेव ने पूछा।

"बेटा, अब ठीक हो गई हूँ। देखते नहीं, अपने पैरों से चलकर यहाँ तक आ गई हूँ।"

"तू क्यों जा रही है, मौसी ? तू मत जा।"

"मैं बूढ़ी हूँ न, बेटे, अब मैं फिर से जवान होकर आऊँगी," मौसी ने मुसकराते हुए कहा।

"हमारे लिए क्या लाएगी, मौसी ?"

"लाऊँगी, लाऊँगी, चना–चबेना लाऊँगी। गुड़–शक्कर लाऊँगी। लड़कियों के लिए मोती लाऊँगी।" मौसी ने कहा।

थोड़ी देर तक मौसी के पास बतियाकर लड़के आगे बढ़ गए। पर थोड़ी दूर जाने पर मुड़कर देखा तो मौसी पुल पर बैठी रो रही थी। उसकी आँखें ऐसी छलछला आईं थीं कि आँसू थमने में नहीं आते थे।

सहसा सभी लड़के लौट पड़े।

"हम तुम्हें कहीं नहीं जाने देंगे। मौसी, तू हमारे साथ वापस मुहल्ले में चल"–सबने एक स्वर में कहा।

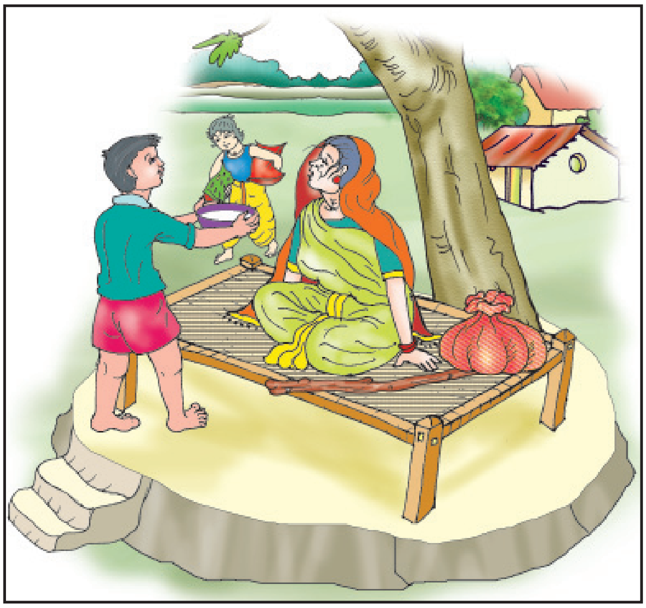

"नहीं बेटा, अब मुझे जाना ही है"– मौसी हकलाते हुए बोली।

पर लड़के न माने। दो–तीन जने भागकर सड़क पार गए, जहाँ एक दुकान के सामने खाट बिछी थी। वे खाट उठा लाए। उसपर उन्होंने मौसी को जबरदस्ती बैठा दिया। साथ में गठरी और लाठी भी रख दी। फिर खाट उठाकर सभी बच्चे मुहल्ले की ओर चल दिए।

खाट को बच्चे सीधे नीम के पेड़ के नीचे ले आए। कन्हैया भागकर अपने घर से दरी और तकिया उठा लाया; योगराज अपने घर से एक कटोरा दूध। गोपाल अपने घर से लैम्प उठा लाया, जिसे उसके घरवाले रात को सीढ़ियों में रखा करते थे। बलदेव के पिता जी डॉक्टर थे। वह भागता हुआ गया। अपने पिता जी को दुकान से खींच लाया– "मौसी बीमार है? आप चलकर देखिए।" लड़के आपस में बारियाँ बाँधने लगे कि मौसी के पास रात के पहले पहर में कौन रहेगा और दूसरे पहर में कौन? उन्हें डर था कि मौसी को अगर अकेला छोड़ा तो वह भाग जाएगी।

"अब मैं मर भी जाऊँ तो तुम लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी। मैं तुम्हारे पास ही रहूँगी। तुम जाओ अपने–अपने घर।" जब मौसी ने तसल्ली दी, तब जाकर सबको चैन आया। इस तरह मौसी मुहल्ले में लौट आई। बच्चों ने उसे जाने ही नहीं दिया। फिर तो वह स्वयं भी कहने लगी– "अब मैं सड़क की पटरी पर सो जाया करूँगी, पर अपने बच्चों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी।"

बच्चों के उत्साह को देखकर बच्चों के घरवालों को भी मौसी की चिंता होने लगी। शीघ्र ही मौसी के रहने के लिए जगह मिल गई। हमारे स्कूल में ही हेडमास्टर जी ने उसे काम पर रख लिया। वहीं एक कोठरी में रहने के लिए जगह दे दी।

इस बात को बहुत बरस बीत चुके हैं। मौसी अब भी वहीं है। वह अब सचमुच बुढ़ा गई है, लेकिन तंदुरुस्त है। पोपले मुँह से हँसती है तो बड़ी प्यारी लगती है। अब वह स्कूल की प्याऊ में बैठी, बच्चों को पानी पिलाती है। जब जाड़े के दिन आते हैं तो प्याऊ से हटकर स्कूल के आँगन की धूप में बैठ जाती है। आधी छुट्टी के वक्त बच्चे उसे घेरे रहते हैं। उसके दुपट्टे के छोरों में

पहले की तरह चना–चबेना, मूँगफली, दाल–फुलियाँ बँधे रहते हैं। मौसी बच्चों को कहानियाँ सुनाती–सुंदरबाई की कहानी, काठ के घोड़े की कहानी, तोता–तोती की कहानी। उसे सबकी खबर रहती है। कभी–कभी लाठी टेकती हुई मुहल्ले का चक्कर काटती है। सभी घरों में झाँक–झाँककर घरवालों की कुशल–क्षेम पूछती है। फिर साँझ ढले अपनी कोठरी में लौट आती है।

अभ्यास

पाठ से

1. बच्चों को मौसी ने सितारों जड़ा आसमान कैसे दिखाया ?
2. नन्हे बच्चे मौसी का दामन कब छोड़ देते थे ?
3. मौसी के न रहने पर मुहल्ला कैसा लग रहा था और क्यों ?
4. मौसी अचानक गायब क्यों हो गई ?
5. मौसी अपने बारे में सवाल पूछने पर क्या–क्या जवाब देती थी ?
6. मौसी पुल पर बैठकर क्यों रो रही थी ?
7. लड़कों ने मौसी के लिए क्या–क्या किया ?

पाठ से आगे

1. लेखक की माँ अपने बच्चे से कहती है कि "उस गरीबिनी से लेकर क्यों खाते हो ? वह थोड़ा सा चना–चबेना अपने लिए रखती होगी" इन पंक्तियों में लेखक की माँ का कौन सा भाव मौसी के लिए छिपा है? आपस में विचार कर लिखिए।
2. मैं बूढ़ी हूँ न बेटे, अब फिर से जवान होकर मैं आऊँगी! मौसी ने ऐसा क्यों कहा होगा ?
3. बिज्जू की माँ ने मौसी के साथ जिस तरह का व्यवहार किया, बुजुर्गों के साथ आपने इस तरह का व्यवहार होते देखा होगा। इस तरह की घटनाओं को देखकर आप क्या महसूस करते हैं ? चर्चा कर लिखिए।

5E17V7

4. बच्चों के लगाव से मौसी ने यह क्यों कहा "अब मैं मर भी जाऊँ तो तुम लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी" मौसी का यह वाक्य बच्चों के प्रति उसके किन भावों को प्रकट करता है ? अपनी समझ को लिखिए।

भाषा से

5EA3WU

1. इन वाक्यों को देखें–

   - मौसी प्रतिदिन बच्चों को कहानियाँ सुनाती थी।
   - उसे भरपेट भोजन मिल पाता था।
   - उपरोक्त वाक्यों में आए –'प्रतिदिन' और 'भरपेट' दोनों शब्द सामासिक पद हैं जो अव्ययीभाव समास के उदाहरण हैं। इस समास में पहला पद प्रधान होता है और इससे बना समस्त पद अव्यय होता है अर्थात् उसका रूप कभी नहीं बदलता। इसके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगता है। जैसे हाथों–हाथ, बेशक–शक के बिना, निडर –डर के बिना, निस्संदेह–संदेह के बिना।

   पाठ में आए अन्य अव्ययीभाव समास के पद ढूँढ़कर लिखें।

2. मैं यहाँ से जा रही हूँ बेटा कहते हुए मौसी की आँखें भर आईं। 'आँखें भर आना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है आँखों में आँसू आना 'विछोह की पीड़ा झलकना'। इसी तरह आँखों से संबंधित बहुत सारे मुहावरे प्रचलित हैं। उन्हें खोजकर अर्थ सहित लिखिए।

3. - यहाँ क्यों बैठी हो मौसी ?
   - तबीयत कैसी है ?
   - तू क्यों जा रही है मौसी ?

   उपर्युक्त तीनों वाक्य प्रश्नवाचक (?) हैं। पाठ में बहुत सारे स्थानों पर प्रश्न वाचक वाक्यों का प्रयोग हुआ है। उन्हें खोज कर लिखिए और स्वयं से प्रश्न वाचक शब्दों (क्या, क्यों, कैसे, कब, कहाँ) का प्रयोग करते हुए इस प्रकार के वाक्यों का निर्माण कीजिए।

5EIYYH

योग्यता विस्तार

1. इस कहानी का सार कक्षा में सुनाइए।
2. 'मौसी' जैसा या उससे मिलता–जुलता कोई पात्र हर मुहल्ले में अवश्य होता है। उसके बारे में दस वाक्य कक्षा में बताइए।
3. 'भीष्म साहनी' की अन्य कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।
4. विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' की कहानी 'ताई' भी पढ़िए और उसे कक्षा में सुनाइए।